14 बाइबल-आधारित कारण – प्रभु में बहनों के शिक्षा देने और अगुवाई करने के पक्ष में

टेरन विलियम्स (Terran Williams) · जर्मन संस्करण, संपादन और परिवर्धन: Hans-Jörg Ronsdorf · मार्च 2023 · अक्टूबर 2026 में संशोधित

यह विषय आज भी गरमागरम बहस का विषय है। वह दृष्टिकोण, जिसके अनुसार स्त्रियाँ कलीसिया में न शिक्षा दे सकती हैं और न अगुवाई कर सकती हैं, और ये दोनों काम केवल पुरुषों के लिए आरक्षित हैं, "पूरकतावाद" कहलाता है। इसके विपरीत तथाकथित "समानतावाद" है, जो स्त्रियों को भी ये दोनों काम सौंपता है, और लिंग के आधार पर कोई अन्तर या प्रतिबन्ध नहीं करता। दोनों शब्द 1990 के दशक में अमेरिका के सुसमाचारवादी (इवैन्जेलिकल) आन्दोलन में गढ़े गए। "पूरकतावाद"[1] शब्द का अर्थ यद्यपि स्त्री और पुरुष का एक-दूसरे को पूरा करना है, परन्तु साथ ही एक स्पष्ट रूप से पदानुक्रमित (ऊँच-नीच वाला) पूरकपन भी: तथाकथित सृष्टि की व्यवस्था में स्त्री पुरुष के अधीन है। वह अगुवाई करता है, वह पीछे चलती है। वास्तव में पूरक वही हो सकता है जो बराबर बड़ा, बराबर मूल्यवान, बराबर शक्तिशाली या एक ही प्रकार का हो। ठीक यही एक पुरुष और (उसकी) एक स्त्री अपने स्वभाव से हैं – परन्तु पुरुष होने और स्त्री होने की अपनी भिन्नता में।

समानतावाद भी अपनी शब्दावली में उतना ही अस्पष्ट है। वह पुरुष और स्त्री को समान अधिकार रखनेवाले और अगुवाई करने तथा शिक्षा देने के लिए नियुक्त मानता है। परन्तु यह दृष्टिकोण दोनों लिंगों को "एक जैसा" या भेद-रहित नहीं बनाता, जैसा यह शब्द संकेत करता है। यह दूसरा दृष्टिकोण भी पुरुष और स्त्री के एक-दूसरे को पूरा करने को देखता है, जिन्हें एक-दूसरे के लिए सृजा गया, ताकि अपनी भिन्नता में एक-दूसरे का साथ दें।

हम एक ऐसे दृष्टिकोण को मानते हैं जिसे सबसे अच्छे रूप में "समानतावादी पूरकतावाद" कहा जा सकता है: पुरुष और स्त्री समान अधिकार के साथ, बिना किसी पदानुक्रम या अधिकार के अन्तर के, एक-दूसरे को पूरा करते हैं। (HJR)

बहुत से पूरकतावादी मित्र – और वे अब भी मित्र हैं और मित्र रहेंगे – इस बात से अनजान हैं कि पुरुष-अधिकार के पक्ष में "बाइबल-आधारित" तर्क वास्तव में अब विश्वसनीय रूप से सिद्ध नहीं किया जा सकता। उसका बने रहना संदिग्ध विद्वत्ता, त्रुटिपूर्ण तर्क, और उन संस्थाओं और व्यक्तित्वों की शक्ति का परिणाम है जो एक ऐसे मानवीय ढाँचे को टिकाए हुए हैं जिसे न बाइबल का और न परमेश्वर का समर्थन प्राप्त है। तो इस शव को कौन खड़ा रखे हुए है? कबीले जैसी या समूह जैसी अडिग सोच की एक भावना, जो (कम से कम इस समय) अब भी सत्य पर विजयी है।

बहुत से लोग, जो सच्चाई से और परमेश्वर का भय मानते हुए जीना चाहते हैं, बुरे धर्मविज्ञान का अनुसरण करने और यह मानने के लिए बहकाए गए हैं कि अगुवाई में स्त्रियाँ पवित्रशास्त्र पर सांसारिक संस्कृति की विजय हैं। परन्तु निम्नलिखित बाइबल-तथ्यों पर ध्यान दीजिए:

1. यद्यपि आदम और हव्वा को भिन्न रूप में सृजा गया, फिर भी हव्वा को आदम के कार्य में बराबर के समकक्ष के रूप में सृजा गया, न कि उसकी अधीनस्थ के रूप में। पूरकपन, हाँ। पदानुक्रम, नहीं। **(यहाँ – गहन अध्ययन के लिए लिंक, अंग्रेज़ी में, आगे के लिंक भी)**

2. यह धारणा कि पुरुषों को प्रभुता करनी चाहिए, पतन के बाद आई। सृष्टि नहीं, बल्कि पहले मनुष्यों की आज्ञा न मानने का परिणाम था कि पुरुष स्त्री पर प्रभुता करने लगा (उत्पत्ति 3:16)। (अब भी आश्वस्त नहीं? अधिक जानकारी यहाँ) **यह बात हमें बाद के बाइबल-पदों की इस प्रकार व्याख्या करने से पहले रुककर सोचने के लिए प्रेरित करे, मानो परमेश्वर पुरुष-अधिकार को आदर्श बना देता हो।**

3. परमेश्वर ने दबोरा को उसके समय में परमेश्वर की प्रजा की सबसे ऊँची नागरिक और आत्मिक अगुवा ठहराया, और वह भी इस हद तक कि वह सबसे ऊँचे सेनापति बाराक को आदेश देती थी (न्यायियों 4 और 5)। यह तथ्य 1 तीमुथियुस 2:12 की पूरकतावादी व्याख्या पर छाया डालता है। यहाँ

4. यीशु स्त्रियों के मूल्य और उनकी सेवा को ऊँचा उठाने में अग्रदूत थे। विशेष रूप से पहले ईस्टर के दिन मरियम मगदलीनी से यीशु की भेंट और उसे सौंपे गए काम पर ध्यान दीजिए। आश्चर्य की बात है कि यीशु ने इतिहास के सबसे महत्वपूर्ण दिन में लोगों के लिए एक पाठ बुन दिया: अपनी बहनों के मुँह से निकले परमेश्वर के वचन पर भरोसा रखो (यूहन्ना 20:17-18)। (यहाँ और यहाँ) और नहीं, यीशु ने 12 पुरुष प्रेरितों को किसी "सृष्टि के सिद्धांत" या "सृष्टि की व्यवस्था" के कारण नहीं चुना। उन्होंने यह उद्धार के इतिहास के एक संक्रमण-काल से जुड़े प्रतीकात्मक कारणों से किया। (यह निश्चित है)

5. 1 तीमुथियुस 3 और तीतुस 1, जो प्राचीनों की योग्यताओं से संबंध रखनेवाले एकमात्र खंड हैं, सही ढंग से समझे जाएँ तो स्त्रियों के प्राचीन होने की सम्भावना को खुला छोड़ते हैं – यह एक ऐसा तथ्य है जिसे प्रमुख पूरकतावादी भी अब स्वीकार करते हैं। यहाँ गलातियों 3:28 ("मसीह में न तो ... न ...") यद्यपि कोई रामबाण उत्तर या प्रमाण नहीं है, फिर भी जब हम यह मानते हैं कि परमेश्वर पवित्रशास्त्र में किसी दूसरे स्थान पर स्त्रियों को (या दासों को या अन्यजातियों को) अगुवाई करने या शिक्षा देने से स्पष्ट रूप से मना करता है, तो इसे कम से कम हमें रुककर सोचने पर विवश करना चाहिए।

6. यद्यपि नए नियम में हमारे पास किसी कलीसिया के अगुवे या प्राचीन का नाम नहीं मिलता, न स्त्री का न पुरुष का (शायद पतरस को छोड़कर), फिर भी इस बात के प्रमाण हैं कि स्त्रियाँ कलीसियाओं की अगुवाई करती थीं और शिक्षा देती थीं। प्रिस्किल्ला लगभग निश्चित रूप से इफिसुस की कलीसिया में एक अगुवा और शिक्षिका थी, और सम्भवतः दूसरी कलीसियाओं में भी। अधिक जानकारी यहाँ – या यह वीडियो देखिए। यह बात 1 तीमुथियुस 2:12 की पूरकतावादी व्याख्या के विरुद्ध है, ठीक वैसे ही जैसे यीशु की यह आज्ञा कि उसके चेले (पुरुष और स्त्रियाँ) सब लोगों को सिखाएँ (मत्ती 28:19-20)। इसलिए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि जिस एक कलीसिया में प्रिस्किल्ला सेवा करती थी, वहाँ पुरुष और स्त्रियाँ "उपदेश का एक वचन" लाते थे (1 कुरिन्थियों 14:26), और कि परमेश्वर ने प्रिस्किल्ला को उसकी अगली कलीसिया में कलीसिया के भावी महान शिक्षकों में से एक, अपुल्लोस, को सिखाने के लिए प्रयोग किया (प्रेरितों के काम 18:26)।

7. केवल प्रिस्किल्ला ही नहीं, बल्कि दूसरी स्त्रियों ने भी, जो अपने घरों की स्वामिनी या ज़िम्मेदार थीं, अपने घरों में कलीसियाएँ स्थापित कीं या उनकी मेज़बानी की; इनमें से कुछ के नाम नए नियम में बताए गए हैं। इससे संकेत मिलता है कि सम्भवतः वे इन कलीसियाओं की अगुवाई के लिए भी उम्मीदवार थीं। अब भी आश्वस्त नहीं? अधिक जानकारी यहाँ

8. प्रिस्किल्ला अकेली नामित शिक्षिका नहीं थी। फीबे को बहुत सम्भवतः पौलुस ने यह काम सौंपा था कि वह रोम की एकत्रित कलीसिया को रोमियों की पत्री समझाए, जिसे वह पौलुस की "पत्र-वाहिका" के रूप में कुरिन्थुस से रोम ले गई थी (रोमियों 16:1-2)। प्रमाण आप यहाँ पाएँगे।

9. वेन ग्रूडम (Wayne Grudem) के इस तर्क के बावजूद कि ऐसा नहीं था, नए नियम की कलीसिया में भविष्य-द्वक्तिनें एकत्रित कलीसिया में एक प्रकार की शिक्षा देती थीं (1 कुरिन्थियों 14:26)। यहाँ (1 घंटा 7 मिनट से आगे)।

10. एक ऐसी स्त्री थी जिसकी भूमिका किसी अगुवा या शिक्षिका से भी अधिक प्रभावशाली थी। **यह बहुत सम्भव है कि यूनिया (Junia), एक स्त्री, बरनबास और सीलास के समान एक प्रमुख प्रेरित थी (रोमियों 16:7)।** यह भी 1 तीमुथियुस 2:12 की पूरकतावादी व्याख्या के विरुद्ध है। इसके कारण और तथ्य आप यहाँ पाएँगे।

11. **पौलुस के विवादित पाठ, यदि उन्हें सही ढंग से समझा जाए, अब तक कही गई किसी भी बात को कमज़ोर नहीं करते।** 1 कुरिन्थियों 11:2-16 और 14:34-35, सही व्याख्या करने पर, सभी कलीसियाओं में स्त्रियों की अगुवाई पर कोई सामान्य प्रतिबन्ध नहीं हैं। ये खंड कितने ही विवादित क्यों न हों, इसके प्रमाण स्पष्ट हैं। 1 कुरिन्थियों 11 पर गहन अध्ययन यहाँ, 1 कुरिन्थियों 14 पर यहाँ।

12. 1 तीमुथियुस 2:12-14 पहली दृष्टि में, विशेषकर कुछ अनुवादों में, ऐसा आभास दे सकता है कि पुरुष-अधिकार को सामान्य रूप से स्थापित किया गया है; परन्तु "प्रभुता करना" शब्द, यूनानी **authentein** ("मैं स्त्री को अनुमति नहीं देता कि ... पुरुष पर authentein करे" में), की, और साथ ही साहित्यिक संदर्भ और परिस्थिति-संदर्भ (जैसे 1 तीमुथियुस में) की अधिक गहन जाँच दिखाती है कि यह व्याख्या ग़लत क्यों है। बाइबल के समग्र (कैनन के) संदर्भ पर भी ध्यान देना चाहिए: विशेष रूप से बाइबल में बहुत सी स्त्री अगुवे और शिक्षिकाएँ ऐसी व्याख्या के विरुद्ध गवाही देती हैं। (मेरी पुस्तक के अध्याय 7 से authentein पर मेरे काम का एक अंश। या परिशिष्ट में 1 तीमुथियुस 2:12 पर महत्वपूर्ण पूरकतावादी अध्ययनों की बार्टलेट (Bartlett) द्वारा की गई आलोचना का सारांश यहाँ पढ़िए।)

13. विवाह में भूमिका के विषय में क्या? यदि नया नियम पत्नी पर पति के अधिकार की शिक्षा देता भी हो, तो भी इसका अर्थ यह नहीं कि अगुवे और प्रचारक पुरुष ही होने चाहिए। **1 कुरिन्थियों 7 में, जो नए नियम में विवाह के विषय में सबसे लम्बा खंड है, यह स्पष्ट होता है कि विवाह में निर्णयों के लिए एक दूसरे के अधीन रहना और आपसी सहमति ही मानक है।** अजीब बात है कि शायद ही किसी को इसकी जानकारी हो। यहाँ इफिसियों 5 और 1 पतरस 3, यदि उनकी सही व्याख्या की जाए, विवाह में एक दूसरे के अधीन रहने की शिक्षा देते हैं, न कि पति के एकतरफ़ा अधिकार की। (इफिसियों 5 और 1 पतरस 3 पर विंगर (Winger) की, बार्टलेट द्वारा और मेरे द्वारा की गई आलोचना देखिए।)

14. एक अन्तिम और बहुत महत्वपूर्ण बात: **जब कलीसिया की उन्नति की बात आती है, तो वरदान लिंग से बढ़कर हैं।** पतरस के लिए पिन्तेकुस्त एक नए युग का आरम्भ था, जिसमें प्रचार-सेवा के वरदान पुरुषों और स्त्रियों को भरपूरी से दिए गए (प्रेरितों के काम 2:17-18)। कौन पास्टर की सेवा कर सकता है, अगुवाई कर सकता है या शिक्षा दे सकता है? स्त्री अगुवों और प्रचारकों के बाइबल के उदाहरणों को पौलुस की इस सलाह से सबसे अच्छे ढंग से समझाया जा सकता है कि लिंग की परवाह किए बिना वरदान (और उनके अनुरूप मसीह-समान चरित्र) ही कलीसिया में सेवा का आधार हैं। प्रेरित के अनुसार जिनके पास प्रचार करने, अगुवाई करने या शिक्षा देने का वरदान है, उन्हें यह करना भी चाहिए। यहाँ केविन डियंग (Kevin DeYoung) अपने TGC-लेख में पूछते हैं: "क्या बच्चों और दूसरी स्त्रियों को सिखाना किसी स्त्री के वरदानों की बर्बादी है?" पौलुस डियंग को उत्तर देता है (1 कुरिन्थियों 12:21-24) कि यह बात वरदान-प्राप्त स्त्रियों का अनादर करती है

और उन पुरुषों को वंचित करती है जिन्हें उनकी सेवा की आवश्यकता है। **जब पुरुष स्त्री अगुवों और शिक्षिकाओं की सेवा को केवल इसलिए ठुकराते हैं कि वे स्त्रियाँ हैं, तो यह ऐसा है मानो देह का एक अंग दूसरे अंग से कहे: "मुझे तेरी आवश्यकता नहीं।"**

मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचता हूँ: पुरुष और स्त्रियाँ, यद्यपि परमेश्वर ने उन्हें भिन्न रूप में सृजा है, कार्य की दृष्टि से समान हैं। **यह संस्कृति का कोई आविष्कार नहीं, बल्कि परमेश्वर के उस राज्य का एक मूल मूल्य है, जो था, जो है और जो आनेवाला है।**

यह एक ऐसा मूल्य भी है जो काम करता है – और अद्भुत ढंग से। **पुरुषों और स्त्रियों से मिलकर बनी अगुवाई और प्रचार की टीमें, और एक दूसरे के अधीन रहनेवाले पति-पत्नी, अधिक स्वस्थ और अधिक सुखी हैं।** इसके विपरीत कलीसियाओं और विवाहों में पुरुष-अधिकार की शिक्षा ने आत्मिक स्वास्थ्य के कुछ संकटों में योगदान दिया है और इस प्रकार बहुत सी कलीसियाओं और विवाहों को अनावश्यक रूप से हानि पहुँचाई है। **इसने वरदान-प्राप्त और बुलाई गई स्त्रियों को भी सीमित कर दिया है और मसीह के लिए कलीसिया की गवाही को कमज़ोर किया है, विशेष रूप से एक ऐसी संस्कृति में जो स्त्रियों को समाज के अन्य सभी क्षेत्रों में अपने वरदानों का प्रयोग करने की स्वतंत्रता देती है।**

पुनश्च: यदि आपके पास कुछ और देखने का समय है, तो यह एक वीडियो है, जिसमें मेरे देश की असेम्बलीज़ ऑफ़ गॉड (Assemblies of God) की कलीसियाओं का एक बड़ा समूह मेरा साक्षात्कार लेता है; इन कलीसियाओं ने मेरी पुस्तक पढ़ने के बाद सेवा में स्त्रियों के विषय में अपना शिक्षा-संबंधी दृष्टिकोण नया किया। वास्तव में साक्षात्कार के बाद मुझे यह देखने का सौभाग्य मिला कि उन्होंने पहली बार सार्वजनिक रूप से बहुत सी स्त्रियों को अगुवों के रूप में नियुक्त किया।

टेरन विलियम्स (Terran Williams) के लेख पर आधारित; जर्मन अनुवाद, उनकी कृपापूर्ण अनुमति से संपादित और परिवर्धित: Hans-Jörg Ronsdorf, 22.03.2023

पूरकतावाद प्रायः केवल इसलिए चलता है क्योंकि स्त्रियाँ उसका समर्थन करती हैं। क्या होगा यदि हम सब उसका समर्थन करना बन्द कर दें?

www.hans-joerg-ronsdorf.de

टिप्पणियाँ

1. **पूरकता (Komplementarität) ज्ञान-मीमांसा का एक शब्द है, जो दो (प्रत्यक्ष रूप से) परस्पर विरोधी, एक-दूसरे को बाहर करनेवाली, एक-दूसरे में घटाई न जा सकनेवाली वर्णन-पद्धतियों या प्रयोग-व्यवस्थाओं को दर्शाता है, जो फिर भी किसी घटना या विषय को उसकी सम्पूर्णता में समझने के लिए अपने परस्पर पूरकपन में आवश्यक हैं।**

   पूरक (Komplement) क्या है? पूरक (लातीनी: complementum = "पूर्ति", "पूरा करने का [साधन]") सामान्य रूप से उस वस्तु को कहते हैं जो किसी दूसरी वस्तु की पूर्ति करती है।

   "पूरक" (komplementär) के लिए सबसे अधिक प्रयुक्त समानार्थी शब्द हैं: पूरा करनेवाला, पारस्परिक, परस्पर-प्रतिवर्ती।